# चिंता के केन्द्र में एक बालक

दिगन्तर प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में एक समूह को तीन शिक्षक अलग-अलग विषय पढ़ाते हैं । जबकि हर शिक्षक दो समूहों को एक ही विषय पढ़ाता है । शिक्षक अपनी दैनिक डायरी में बच्चों का गतिविधि विवरण लिखते है । यहां हम एक समूह के तीनों शिक्षकों की डायरी से झांकते एक बच्चे की मार्फत शिक्षकों की चिंता और उनके समान सरोकार से रुबरू हो रहे हैं । यह बहुत शुरूआती डायरियां हैं और बच्चे की समस्या के बारे में अधिक विस्तार की अपेक्षा करना यहां उचित नहीं है ।

**बालक का नाम : रामू** **समूह : रोशनी**

**दिनांक 2/2/2000** **शिक्षिका : मीरा**

आज यह बालक स्कूल में समय पर उपस्थित हो गया था। सभा में जब बैठा था, तो पास वाले बच्चों से कुछ-न कुछ बातें कर रहा था। सभा में कई बार लाइन को खराब कर देता है । इसका ध्यान केन्द्रित करने के लिए सभा में कई कई बार टोकना पड़ता है। बालक 'मन चंगा, प्रकृति का है । जो मन में आया वही करने लगता है। बराबर के साथियों एवं अन्य बच्चों को अनेक तरह से परेशान करना तो इसके लिए आम बात है। गणित के कालांश में जब भाग तथा गुणा पर काम क्समझा रही थी, तब यह साजिद को चॉक फेंक कर मार रहा था । साजिद के शिकायत करने पर मैने इससे बात की तो कोई जबाव नहीं दिया । इसके बाद एक दो बच्चों को भी नाम चिड़ाकर तथा अन्य तरीके से परेशान किया मैंने इसको पीछे से बुलाकर सबसे आगे बिठा लिया। जब मैं भाग देने वाली संख्या में सैंकडा पूछ रही थी, तब यह बालक ब्लैक बोर्ड के नीचे पड़े टुकड़ों को इकट्ठा करके सैकड़ा पर चॉक मार कर बोला यह सैंकडा है। मैंने इसके व्यवहार पर बातचीत की तो बोला मैं तो चाक को उसकी जगह पर रखने के लिए फैंक रहा था । चॉक को रखने के तरीके पर भी बातचीत की गई । इस प्रकार बोर्ड पर काम समझाते समय इसने काफी डिस्टर्ब किया । वैसे अन्य दिनों में भी रामू से कई बार अनेक मामलों में बातचीत करनी पड़ती है । यह बालक ऐसा क्यों करता है, मैं अभी तक नहीं समझ पाई हूं । शुरू शुरू में मैं जब गणित का पीरीयड लेने लगी थी, तब इस बालक की गुणा भाग में समझ अस्पष्ट थी । लेकिन अब यह गुणा भाग में ठीक काम करने लगा है। भाग का काम करने में शुरू में तो मना करता है, लेकिन बाद में स्वयं कर लेता है। भागफल में 0 की अवधारणा में गलती करता था। अब भाग ठीक करने लगा है। लेकिन बालक को छेड़खानी करने में मजा आता है । क्योंकि छेड़खानी करके काफी खुश होता है। इसके व्यवहार में बदलाव कैसे हो पायेगा यह एक समस्या है।

**दिनांक : 9/2/2000**

**शिक्षक : कैलाशचन्द**

बालक शाला में कभी कभी तो नियत समय पर एवं अधिकतर लेट आता रहा है । आज भी बालक दो तीन मिनट लेट आया है। आकर पानी भरने में जुड़ा है । अन्य बच्चों की मदद भी करता है। किन्तु किसी भी बालक को मुंह में जो आये बोल देता है । बालक कहने से पहले सोचता नहीं है कि जो मैं कह रहा हूं उचित है या नहीं है । समूह में भी डिस्टर्ब करने से बाज नहीं आता है । इस बालक से बातचीत करके गलतियों को अहसास कराने की कोशिश की जाती रही है लेकिन फिर वही हरकत, इसके कोई फर्क नहीं पड़ता है । बन्ध्याली से आता है इस बालक की उम्र 11-12 वर्ष है । इसका व्यवहार भिन्न है कभी कभार ऐसा लगता है कि यह जानबूझकर ऐसा कर रहा है। इस बालक में गुस्सा भी अधिक है। जो खेलों में खूब झलकता है कभी कभार जिद् इतनी करता है कि अपनी बात रहे, इसके लिए भरपूर कोशिश करता है। चाहे सारे बच्चे एक तरफ हों।

**दिनांक : 11.2.2000 शिक्षक: नवलकिशोर**

यह बालक रोशनी समूह में पढ़ता है । इस बालक की उम्र लगभग 11 वर्ष है । आज रामू समय पर शाला आया तथा सफाई कार्य में जुटा । यह बालक स्वभावत: बातूनी किस्म का है, बच्चों से अक्सर झगड़ता भी रहता है । लंच में मैं रामू के साथ खेला हूं। दो दिन पूर्व मैंने इससे लगातार 'समस्याओं' पर बातचीत भी की है। आज सभा में खेल का दिन था । हम (सभी बच्चे व मैं) क्रिकेट खेल रहे थे । मैंने नोट किया कि आज रामू ने न तो कोई झगड़ा किया और न ही अव्यवस्था, पता नहीं क्यों ?

समूह में रामू काम के दौरान अन्य बच्चों से बातें करता रहा। इसने मात्र दो ही प्रश्न किये । शेष काम अधूरा ही रहा । काम के प्रति मुझे यह थोड़ा अगंभीर लगा । मैंने रामू से बातचीत की और काम करने की तरफ ध्यान दिलाया । बातचीत में बालक ने आगे से गंभीर होकर काम करने का विश्वास दिलाया ।

सामान्यत: रामू का रवैया काम के प्रति अगंभीर ही रहता है। लेकिन कभी कभी वास्तव में किसी समस्या के कारण भी यह काम नहीं कर पाता, जैसे कविता ही समझ में नहीं आई है तो प्रश्न उत्तर कैसे करे ? इत्यादि । उस समय मैं इसकी समस्या को पकड़कर निदानात्मक प्रयास भी करता हूं । मेरे यथोचित प्रयास बालक के साथ जारी हैं । सफलता अभी भविष्य के गर्भ में छिपी हुई लगती है।

**दिनांक : 14/2/2000 शिक्षक : नवल किशोर**

रामू आज समय से 10 मिनट लेट शाला पहुंचा । इस वजह से सफाई कार्य से भी नहीं जुड़ पाया परन्तु सभा हेतु दरियां बिछाने में रामसिंह ने मेरी मदद अवश्य की । सभा में करवाए गीत-कविताओं में इस बालक ने रूचि से भाग लिया। लेट आने वाले बच्चों से की जाने वाली बातचीत में आज रामू भी शामिल था। इस बालक ने अपने लेट होने का कारण रास्ते में किसी बोरींग मशीन को देखने लग जाना बताया । लेकिन शाला समय पर आना चाहिए इस बात को स्वीकार किया और आगे से समय पर आने का विश्वास दिलाया।

समूह में रामू ने अपनी पुस्तक से संबंधित प्रश्नोत्तर ठीक किये, हालांकि बीच बीच में अन्य बच्चों से बातें भी करता रहा। मैने तीन बार इसे अपने काम की तरफ ध्यान दिलाया । काम पूरा होते ही यह बालक खुशी से चहकता हुआ लघुशंका से निवृत होने के लिए समूह से बाहर चला गया । थोड़ी देर बाद जब वापिस लौटा तो अपने पास बैठे साथी की शिकायत करने लगा । मैंने जब दोनों से बातचीत की तो पता चला कि रामू ने ही पहले अपने साथी को छेड़ा था। बातचीत के बाद यह बालक पुन: अपने काम में लग गया । मुझे लगा बीच-बीच में कुछ हरकतें करके यह बालक शिक्षक का या पूरे समूह का ध्यान अपनी तरफ खींचना चाहता है। परन्तु क्यों ? इस क्यों का जवाब तलाशने में शायद अभी समय लगे।

लंच के दौरान मैंने देखा कि रामू खुशी से अपने साथियों के साथ क्रिकेट खेल रहा था । मैंने भी इन बच्चों के साथ थोड़ी देर क्रिकेट खेला । रामू का व्यवहार खेल में सामान्य ही था ।

**दिनांक : 15/2/2000 शिक्षक : नवल किशोर**

रामू आज समय पर शाला आया, जैसा कि उसने कल विश्वास दिलाया था । इस बालक ने आज टॉयलेट की सफाई करवाने में मेरी मदद की । सभा में इस बालक ने रूचि से भाग लिया परन्तु बीच-बीच में बातें भी करता रहा । सभा समाप्ति के पश्चात (10 मिनट बाद) यह बालक समूह में उपस्थित हुआ । इसे आज योजनानुसार सुलेख लिखकर पुस्तक पर काम करना था मगर इसने सुलेख ही लिखा। श्रुति लेख लिख रहे अपने साथी फरीद को बीच बीच में पुस्तक 'टिपाने' का प्रयास भी करता रहा। मगर एक बार 'बात' करने पर पुन: अपने काम में जुट गया । जैसे ही पूरा सुलेख लिख लघु शंका से निवृत्त होने के लिए समूह से बाहर चला गया। मुझे यह लगा कि बालक किसी काम को अधिक समय तक टिक कर नहीं कर पाता । शायद ध्यान केन्द्रण नहीं कर पाने की समस्या इसके साथ हो । पर्यावरण अध्ययन के कालांश में भी इस बालक ने एकही पेज का काम किया और किताब बंद कर दी । ये अपनी पूरी क्षमताओं का उपयोग भी काम के दौरान नहीं कर पाता है ।

लंच में आज भी मैंने रामू व अन्य बच्चों के साथ खेल खेला। खेल के दौरान आज रामू ने एक बार सलीम से झगड़ा भी किया जिसे बातचीत द्वारा सुलझा लिया गया । अब मैं रामू के व्यवहार को 'बाल मनोविज्ञान' के सन्दर्भ में समझाने का प्रयास कर रहा हूं । संभवत: बालक की पारिवारिक पृष्ठ भूमि के अध्ययन से बालक के व्यवहार को समझने में मदद मिले ।

**दिनांक : 16/2/2000 शिक्षक : नवल किशोर**

आज यह बालक अनुपस्थित रहा तथा रह-रहकर इसकी अनुपस्थिति मुझे समूह में खलती रही । रामसिंह के रहने से समूह में एक विशेष प्रकार का माहौल बना रहता था जिसका आज अभाव रहा ।

लंच में बच्चों के साथ खेल खेलते समय भी मुझे रामसिंह की अनुपस्थिति का अहसास होता रहा । पता नहीं क्यों ? ◆